प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति मधुबन 1–8–67

ओमशांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब जब बाप कहा जाता है तो इतने बच्चों का एक जिस्मानी बाप तो नहीं हो सकता। यह है रुहानी बाप। ढेर बच्चे हैं। बच्चों के लिए ही यह (टेप,मुरली आदि) सामग्री है। बच्चे जानते हैं हम अभी संगमयुग पर हैं। बैठे हैं पुरुषोत्तम बनने। यह भी खुशी की बात है। बाप ही पुरुषोत्तम बनाते हैं। यह लक्ष्मी नारायण हैं ना। इस सृष्टि में ही उत्तम पुरुष,मध्यम और कनिष्ठ पुरुष होते हैं। आदि में उत्तम ,बीच में मध्य,अंत में कनिष्ठ। मनुष्य तो समझते हैं जब कलियुग का अंत होगा तब हम कनिष्ठ होंगे। अभी कनिष्ठ नहीं समझते हैं। हर चीज पहले नई,बीच में मध्यम फिर कनिष्ठ पुरानी बनती है। दुनियां का भी ऐसे है। कनिष्ठ पुरुष इन बातों को नहीं जानते। वे कह देते शास्त्रों में ऐसा लिखा हुआ है। तुम अभी शास्त्रों के आधार पर नहीं हो। भगवान कोई शास्त्र नहीं सुनाते। तुम कोई शास्त्र नहीं पढ़ते हो। यहां कोई ऐसा गुरू नहीं होगा जिसने शास्त्र न पढ़े हों। शिवबाबा शास्त्र थोड़े ही पढ़ा है। यह बाबा तो बहुत पढ़ी है। जिन2 बातों पर संशय पड़ता है तो फिर समझाना है। बहुत करके ब्रह्मा के लिए ही कहते हैं कि इनको क्यों बिठाया है। तो उनको झाड़ के चित्र पर ले आना चाहिए। देखो,यह नीचे तपस्या कर रहे हैं। उपर में दिखाया है। बहुत जन्मों के अंत में खड़ा है। इनको हम भगवान वा देवता कहां कहते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं इनमें प्रवेश करता हूं। समझाने वाला बड़ा अकलमंद चाहिए। एक भी बेअकल निकलता हैं तो सभी ब्रह्माकुमारियों का नाम बदनाम हो जाता है। पूरा समझाने नहीं आता है। कम्प्लीट पास तो अंत में ही होने हैं। इस समय 16कला सम्पूर्ण कोई बन न सके। नम्बरवार जरूर होते हैं। बाबा के पास समाचार आया जयपुर में एक यादव कुल का आया। बोला हमारे लिए क्यों लिखा है यादव विनाश काले विपरीत बुद्धि। अब उनको समझाने वाला चाहिए ना। इनको कहा गया यहां यूरोपवासी यादव लिखा हुआ है। बोले यादव नाम तो लिखा है यह निकाल दो। अरे, यह तो हम सबके लिए लिखते हैं कि विनाशकाले विपरीत बुद्धि है। विनाश तो सबके सामने खड़ा है। जिनको परमपिता परमात्मा से प्रीत नहीं है तो विनाशकाले विपरीत बुद्धि ठहरी ना। तुम्हारी बाप के साथ प्रीत तो है नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी कुत्ते,बिल्ले सबमें कह देते हो। प्रीत बुद्धि तो नहीं हैं ना। इस पर तुम समझाया सकते हो–जो प्रीत बुद्धि हैं वह विजयंति। जो गाली देते हैं परमात्मा को, उनको विपरीत बुद्धि विनश्यंति कहते हैं। इसमें तुम बिगड़ते क्यों हो?परंतु आजकल मनुष्य है गुण्डे। कोई भी बड़े आदमी को जेल में डालने देरी नहीं करते हैं। दुश्मनी होती है तो फिर कोई न कोई इल्जाम लगाय देते हैं। शूट कर देते हैं। हंगामा तो मचेगा। कोई कर ही क्या सकते?पुलिस का पहरा है। मिलिट्री खड़ी है। गोलियां ,गैस आदि चलाय लेते हैं। बाबा को लिखते हैं गुण्डे लोग कहते हैं हम आग लगावेंगे, यह करेंगे। बाबा ने तुमको कहा था इन्श्योर कर दो। बाबा जानते हैं इन्श्योर हो सकता है। बाबा तो राय देते हैं, करने वाले करें भी ना। सिर्फ कहना थोड़े ही है यह होना चाहिए,यह करना चाहिए। करो ना। मनाह तो की नहीं जाती। बुद्धि भी कहती है जहां अपने प्रॉपर्टी के लिए डर है तो इन्श्योर करना चाहिए ना। पूछते हैं कितने का इन्श्योर करें?500का कर दो। कहते हैं यह तो एक2 पिक्चर भगवान के हैं। यह तो बहुत कीमती चीज है। इनका तो बहुत इन्श्योर होना चाहिए। अरे, भगवान को थोड़े ही इन्श्योर करना है। तुम इन्श्योर करते हो पिक्चर्स को। सभी पिक्चर्स जल जावेंगे तो सब भर कर देंगे। कम जलेगा तो इतना भर कर देंगे। सिर्फ लिखते रहते यह होना चाहिए। बच्चों की अवस्था को बाप ही जाने। लिखते हैं आपने जो क्रिमिनल आई पर समझाया है यह बिल्कुल ठीक आपने कहा है। बाबा नाम नहीं बताय सकते। नहीं तो फिर उनको इस दृष्टि से देखते रहेंगे। भुन2 करते रहेंगे। फिर बिगड़ने में देरी नहीं करते हैं। जैसे गाजी लोग बिगड़ते हैं तो मारने लग पड़ते। पत्थर मारना,भूख हड़ताल करना यह सब सिखलाय कर गए हैं। तो अभी वह सब करते रहते हैं। दिन प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं। वह तो समझते हैं कलियुग अजुन रिरही(रेगड़ी) पहन रहा है। अज्ञान नींद में बिल्कुल सोये हुए हैं। कभी2 कहते भी हैं लड़ाई है तो जरूर भगवान कोई रूप में होगा। रूप तो बताते नहीं। उनको जरूर किसमें प्रवेश होना है। भाग्यशाली रथ गाया जाता है। रथ तो आत्मा का अपना होगा।

उसमें आय प्रवेश करेंगे। उनको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। बाकी वह जन्म नहीं लेते हैं। इनके ही बाजू में बैठ ज्ञान देते हैं। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। त्रिमूर्ति चित्र भी है। त्रिमूर्ति तो ब्रह्मा ,विष्णु,शंकर को ही कहेंगे। जरूर यह कुछ करके गए हैं, जो फिर रास्तों पर ,मकानों आदि पर नाम रखे हें। जैसे इस रोड का सुवास मार्ग नाम है। सुबास की हिस्ट्री तो सब जानते हैं। उन्हों के बच्चे बैठ हिस्ट्री आदि लिखते हैं। फिर उनको बनाय2 बड़ा कर देते हैं। कितनी भी बड़ाई बैठ लिखें। जैसे गुरूनानक का पुस्तक कितना बड़ा बनाया है। इतना उसने तो ....नहीं है। ज्ञान के बदली भक्ति की बातें लिखी हैं ना। ज्ञान बिल्कुल है नहीं। ज्ञान को लिखने की दरकार नहीं। यह चित्र आदि भी बनाये जाते हैं समझाने लिए। यह तो जानते हैं इन आंखों से जो कुछ दिखाई पड़ता है यह सब भस्म हो जानी है। बाकी आत्मा तो यहां रह न सके। जरूर घर चली जावेगी। ऐसी2 बातें कोई सबकी बुद्धि में बैठती थोड़े ही हैं। अगर धारण होती है तो क्लास क्यों नहीं चलाते हैं। 7/8 वर्ष में ऐसा कोई तैयार नहीं होता जो क्लास चलाय सके। बहुत जगह ऐसे चलाते भी हैं। फिर भी समझते हैं माताओं का मर्तबा उंच है। चित्र तो हैं। मुरली धारण कर फिर उस पर थोड़ा समझाते हैं। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बहुत सहज है। फिर पता नहीं क्यों ब्राह्मणी की मांगनी करते हैं। ब्राह्मणी कहां गई तो बस बैठ जाते। मुरली तो कोई भी बैठ सुनाय सकते हैं ना। कहेंगे फुर्सत नहीं। क्लास में नहीं आते। आपस में खिटपिट हो जाती है। अरे, सुबह को तो सभी को फुर्सत होती है। यह तो अपना ही कल्याण करना है। तो औरों का भी कल्याण करना है। बहुत भारी कमाई है। सच्ची कमाई करनी है, जो मनुष्यों का हीरे जैसा जीवन बन जाये। स्वर्ग में तो सब जावेंगे ना। वहां सदैव सुखी रहते हैं। ऐसे नहीं प्रजा की आयु कम होती है। नहीं, प्रजा की भी आयु बड़ी होती है। वहां है ही अमरलोक। बाकी पद कम जास्ती होती है। तो कोई भी टॉपिक .....क्लास कराना चाहिए। ऐसे क्यों कहते अच्छी ब्राह्मणी चाहिए। फीमेल नहीं है तो मेल भी क्लास चलाय सकते हैं। रड़ी न मारनी (चाहिए)। कोई2 को अहंकार आ जाता है। यह छोटी2.....क्या समझावेंगी। माया के विघ्न बहुत आते हैं। बुद्धि में नहीं बैठता। बाबा तो रोज समझाते रहते हैं। शिवबाबा तो टॉपिक पर नहीं समझावेंगे। वह तो सागर है, उछालें मारते रहेंगे। कब बच्चों को समझावेंगे,कब नई2 प्वाइंट समझावेंगे। मुरली तो सबको मिलती ही है। अक्षर नहीं जानते हैं तो सीखना चाहिए। अपनी उन्नति के लिए करना चाहिए। अपना भी और दूसरे का भी कल्याण करना है। यह बाबा भी सुनाय तो सकते हैं ना ;परंतु बच्चों का बुद्धियोग शिवबाबा तरफ रहे। इसलिए हमेशा समझो शिवबाबा कहते हैं। शिवबाबा को ही याद करो। वह सुनाते हैं। शिवबाबा परमधाम से आये हैं। मुरली सुनाय रहे हैं। यह तो परमधाम से नहीं आय सुनाते हैं। हमेशा समझो शिवबाबा इस तन में आय हमको मुरली सुनाय रहे हैं। यह बुद्धि में याद होना चाहिए। यथार्थ रीति यह बुद्धि में रहे तो यह भी यात्रा हो गई ना ;परंतु यहां बैठे भी बहुतों का बुद्धियोग इधर–उधर चला जाता है। गांव याद आयेगा ,घर–बार याद आयेगा। बुद्धि में यह याद रहना है शिवबाबा हमको इसमें बैठ सुनाते हैं। हम शिवबाबा की याद में मुरली सुन रहे थे फिर बुद्धियोग कहां भाग गया?ऐसे बहुतों का बुद्धियोग चला जाता है। यहां तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हैं। समझते हो शिवबाबा परमधाम से आये हैं। बाहर .....में रहने से यह खयाल नहीं रहता। कोई समझते हैं शिवबाबा की मुरलियां कानों से सुन रहा हूं। फिर सुनाने वाले का नाम–रूप याद न रहे। यह ज्ञान सारा अंदर का है। अंदर में खयाल रहे शिवबाबा की मुरली हम सुनते हैं। ऐसे नहीं कि फलानी बहन सुनाय रही है। शिवबाबा की मुरली सुन रहे हैं। यह भी याद में रहने की युक्तियां हैं ना। ऐसे नहीं कि जितना समय मुरली सुनते हैं तो याद में हैं। नहीं। बाबा कहते हैं बहुतों की बुद्धि कहां2 बाहर में चली जाती है। खेती....आदि याद आती रहेगी। बुद्धियोग भटकना न चाहिए। शिवबाबा को याद करने में कोई तकलीफ थोड़े ही है ;परंतु माया याद करने नहीं देती। सारा समय शिवबाबा की याद में रह नहीं सकते और खयालात आ जाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ

अनुसार है ना। जो बहुत नजदीक वाले होंगे उनकी बुद्धि अच्छी रीति लगेगी। सब थोड़े ही 8की माला या 108 की माला में आय सकेंगे। ज्ञान,योग,दैवी गुण यह सब अपन में देखना है। हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। माया के बस तो नहीं हुआ। कोई2 बहुत हबछी बन जाते हैं। हबछ का भी भूत होता है। माया की प्रवेशता कैसे होती है,जो भूख2 करती रहती है। खांव2 पेट में बलावों। कोई2 में खाने की बहुत हबछ होती है। खाना कायदेसिर होना चाहिए। ढेर बच्चे हैं। अभी बहुत बच्चे बनने वाले हैं। कितनी ब्राह्मण—ब्राह्मणियां बनेंगी। बच्चों का (को)भी कहता हूं तुम ब्राह्मण बन गद्दी पर बैठो। सिर्फ माताओं को आगे रखा जाता है। शिवशक्ति भारत माताओं की जय। यहां देखो, जिसकी स्त्री बहुत अच्छी होती है तो उनको विलायत में ले जाते हैं। अच्छी नहीं होती तो ले नहीं जावेंगे। देह का अभिमान भी है ना। यहां वह सब बातें छुड़ाय देते हैं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शनचक्रधारी। नया कोई सुने तो कहेंगे स्वदर्शनचक्र तो विष्णु को है। यह फिर इन सबको कहते रहते। मानेंगे नहीं। इसलिए नये2 को सभी में अलाउ नहीं करते हैं। समझ नहीं सकेंगे। कोई2 एसे ही जाने पर हिरे हुए हैं ना। वहां तो शास्त्रों की ही बातें सुनाते रहते हैं। वह सुनना हरेक का हक है। यहां तो सम्भाल रखनी पड़ती है। कोई शास्त्रों की विरुध बातें देखते हैं तो बिगर (बिगड़)पड़ते है। चित्रों की भी सम्भाल करनी पड़े। हम बाबा के साथ इस आसुरी दुनियां में आये हैं। अपनी राजधानी स्थापन करने। जैसे क्राइस्ट आया अपनी धर्म स्थापन करने। यह बाप राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हिंसा की कोई बात नहीं। गुरू लोग कब हिंसा कर न सके। गुरू गोविंद सिंह के लिए हिंसा दिखाई है ;परंतु वह (हिंसा)तो कर न सके। अंधधुंध सरकार है। जिसको जो आया करते रहते। गाते भी हैं मूत पलीत कपड़ धोये। ....समझते थोड़े ही हैं। भगवानुवाच है इन साधुओं का भी उद्धार करने ....आता हूं ;परंतु समझते (नहीं)हैं। नानक ने भी बाप की महिमा गाई मूत पलीती कपड़ धोये। खुद तो मूतपलीती है ना। (मनुष्य) तो बिल्कुल घोर अंधियारे में हैं। बाप आय घोर अंधियारे से फिर घोर सोझा करते हैं। बाबा,बाबा कर भी फिर मुंह मोड़ देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते। इन जैसा महामूर्ख फिर कोई होता नहीं। भगवान विश्व का मालिक बनाने पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई को छोड़ दे उनको कहा जाता है महान कम्बख्त। कितना (जबरदस्त) खजाना मिलता है। ऐसे बाप को थोड़े ही कब छोड़ना चाहिए। एक गीत भी है आप भल कुछ भी .....आपका दर कभी नहीं छोड़ेंगे। यहां तो थोड़ी बात बिगर झट छोड़ देते हैं। बाप को फार्कती दे बहुत हैं जो छोड़ जाते हैं। बाप के बने, बाप थोड़े ही छोड़ेंगे। बाप आये ही हैं बेहद की बादशाही.....। छोड़ने की तो बात ही नहीं। बाप तो आये ही हैं विश्व का मालिक बनाने। ऐसे नहीं कहेंगे चले जाओ। .....अच्छी धारण करनी है। स्त्रियां भी रिपोर्ट करती हैं। यह हमको बहुत तंग करते हैं नगन होने। फिर .....जाता है। ऐसे भी बहुत झगड़ा करने वाली होती हैं। बच्चों में भी हिम्मत चाहिए। उनको रवाना.....। आजकल लोग बहुत2 खराब हैं। बड़ी सम्भाल करनी पड़ती है। भाइयों को बहनों की सम्भाल .....। बाप को छोड़ने से वर्सा खलास हो जाता है। हम आत्माओं को बाप से वर्सा जरूर लेना है। .....निश्चयबुद्धि विजयंती, संशयबुद्धि विनश्यंति। फिर पद बहुत कम हो जाता है। ज्ञान एक ही ....सागर दे सकते हैं। बाकी सब हैं अज्ञानी। भल कोई अपन को कितना भी ज्ञानी समझे ;परंतु बाप ..... भी अज्ञानी हैं। ज्ञान किसको कहा जाता है यह भी अज्ञान मनुष्य नहीं जानते। सिकीलधे रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा की दिल व जान सिक व प्रेम से याद गुडमार्निंग। अच्छाजी,विदाई।